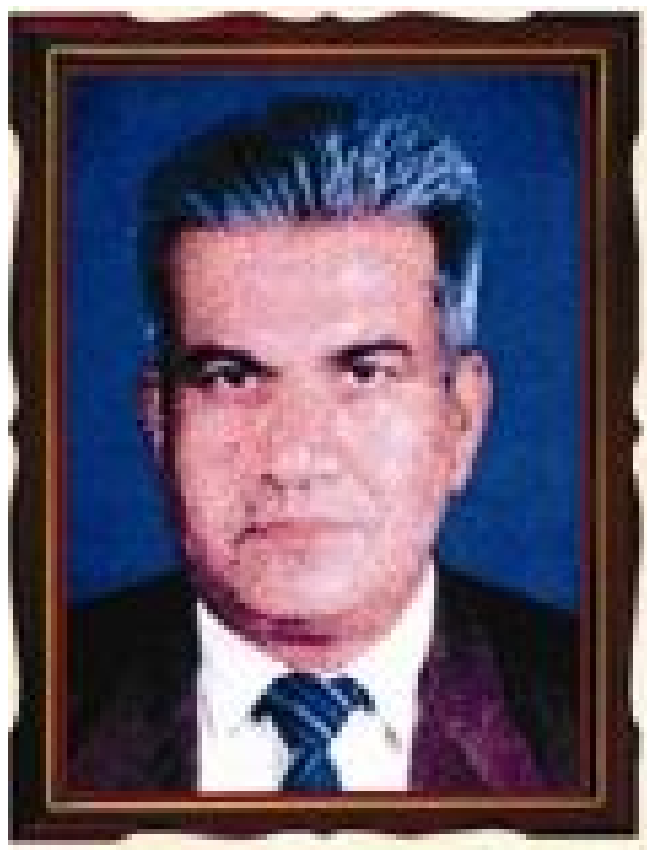
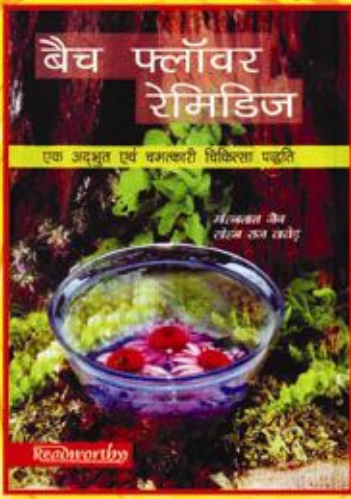


Books Published By Dr. Sohan Raj Tater





बैच फ्लॉवर रेमिडिज

एक अद्भुत एवं चमत्कारी चिकित्सा पद्धति

लेखक

मोहनलाल जैन
सोहन राज तातेड़

ISBN 93-5018-017-0

पुस्तक के संबंध में

स्वास्थ्य पृथ्वी पर रहने वाले हर प्राणी की प्रथम आवश्यकता है। इसके लिए विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का विकास किया गया है। बैच फ्लॉवर रेमिडिज भी एक ऐसी ही चिकित्सा पद्धति है जिसका विकास डॉ. एडवर्ड बैच द्वारा किया गया था। इस चिकित्सा पद्धति में मनुष्य के नकारात्मक भावों को 38 भागों में बांटकर 38 प्रकार की फ्लॉवर रेमिडिज विकसित की गई हैं। इस पुस्तक में इन्हीं रेमिडिज का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

लेखक परिचय

मोहनलाल जैन



मोहनलाल जैन ने एम.कॉम करने के बाद इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ आलटरनेटिव मेडिसिन, कोलकाता से हरबल विज्ञान में डिप्लोमा प्राप्त किया। डॉ. जैन बैच फ्लॉवर रेमिडि एवं हरबल शोध संस्था, रांची के संस्थापक निदेशक हैं तथा आपको बैच फ्लॉवर रेमिडि एवं हरबल रेमिडि से रोगियों के उपचार का 10 वर्ष का अनुभव है। पूर्व में आप मारवाड़ी कॉलेज, रांची में वाणिज्य के व्याख्याता रह चुके हैं तथा बिहार राज्य वित्त सेवा से संयुक्त आयुक्त के पद से सेवानिवृत्त हुए।

सोहन राज तातेड़



सोहन राज तातेड़ सिंधानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू-राजस्थान) के कुलपति एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं सिंधानिया विश्वविद्यालय के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। पूर्व में डॉ. तातेड़ राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवारत रहे तथा अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति प्राप्त की। डॉ. सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा पर आठ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

93-5018-017-0



9 789350 118017 4

Rs. : 895.00

प्रकाशक

Readworthy

Sales Office
4735/22, Prakash Deep Building, Ground Floor,
Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110002-02
Phone : 011-43549197

Editorial & Regd. Office
B-65, Mansa Ram Park, Near Nawada Metro Station,
New Delhi - 110059-06
Phone : 011-25333244

Email : info@readworthypub.com
Web : www.readworthypub.com

ज्ञान रश्मियाँ

प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़

ISBN - 81-7487-716-9



ज्ञान रश्मियाँ



प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़



प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ (जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंधानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंधानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं।

जाने माने विद्वान प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 20 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, समाज भूषण, युवक रत्न, जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, राष्ट्रीय समरसता ऐक्सीलेंसी अवार्ड, राजीव गांधी एवार्ड, इन्डो-नेपाल हारमोनी, प्राकृतिक चिकित्सा रत्न और योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।

पुस्तक के संबंध में

गीता में स्पष्ट रूप से कहा गया है - ज्ञान के समान कोई भी पवित्र वस्तु इस जगत् में नहीं है। ज्ञान रूपी अग्नि सभी कर्मों को भस्म कर देती है। ज्ञान दीपक की तरह स्व-पर प्रकाशित है। ज्ञान से ही अज्ञान दूर होता है। ज्ञान प्रकाश है और जगत् प्रकाश्य है। मानव की चिरकालीन अभिलाषा रही है कि "असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृत गमयेति" अर्थात् मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो, मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो। मानव की यह चिरकालीन अभिलाषा केवल सम्यक् ज्ञान ही पूरी कर सकता है। दर्शन जीवन और जगत् की व्याख्या करता है। योग जीवन का विज्ञान और जीवन जीने की कला है। यह भारत का 6000 वर्ष पुराना वेदों के समय का पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान है। "या विद्याविमुक्तये" विद्या (शिक्षा) वही है, जो मुक्ति की ओर ले जाए। शिक्षा मानव को सुसंस्कृत बनाती है। जैन दर्शन में बताया गया "सम्यक् दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्ष मार्गः" मोक्ष के मार्ग सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र्य हैं। अहिंसा जैन दर्शन की पहचान है। अहिंसा, संयम और तप के उत्कृष्ट मंगल कहा गया है।

प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ "ज्ञान रश्मियाँ" के लेखक प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों के पी-एच.डी. शोध-निर्देशक हैं। राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में उपस्थित होकर शोध-निबंध प्रस्तुत करना उनकी रूचि का मुख्य विषय है। "ज्ञान रश्मियाँ" शोध-ग्रन्थ लेखक के दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों पर इन सम्मेलनों में प्रस्तुत शोध-निबंधों का संग्रह है। यह शोध-ग्रन्थ शोधार्थियों के समक्ष प्रस्तुत है। शोधार्थियों एवं पाठकों की संतुष्टि में ही लेखक की सफलता एवं प्रसन्नता निहित



रूपये 550/-

RADHA PUBLICATIONS

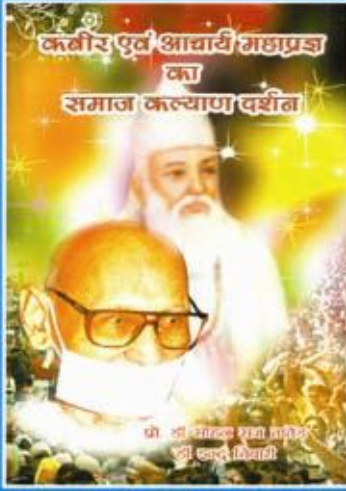
4231/1, Ansari Road, Daryaganj,

New Delhi - 110002

Phone : 23247003, 23254306

Website : radhapublications.com

Email : radhapublications@rediffmail.com



कबीर एवं आचार्य महाप्रज्ञ का समाज कल्याण दर्शन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड
डॉ. इन्दु तिवारी

ISBN - 81-8182-085-1



प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड (जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंधानिया विश्वविद्यालय, पबेरी बड़ी (झुंझुनू-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंधानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं।

जाने माने विद्वान प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 12 पुस्तकें प्रकाशनार्थ हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, समाज भूषण, युवक रत्न, जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, राष्ट्रीय समरसता ऐक्सिलेंसी अवार्ड, राजीव गांधी एवार्ड, इन्डो-नेपाल हारमोनी, प्राकृतिक चिकित्सा रत्न और योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।



डॉ. इन्दु तिवारी:

जन्म : 18 मई 1977,
शैक्षणिक योग्यता : एम.ए., पी.एच.डी.
रुचियाँ : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य, अध्यापन कार्य
सम्पर्क सूत्र : डॉ. इन्दु तिवारी
व्याख्याता, हिन्दी राजकीय महाविद्यालय, फौम-305921
जिला - राजसमन्दराज.
मो. 9828615901, 9352424899

पुस्तक के संबंध में

मानव जाति के सर्वांगीण सुरक्षा एवं मंगल को मानव कल्याण से संदर्भित किया गया है। समाज का वास्तविक आधार सामाजिक व्यवहार ही है। लोक कल्याण के मूल में सर्वजनहिताय की भावना ही परिलक्षित होती है। संत कबीर एवं आचार्य महाप्रज्ञ दोनों की मान्यता है कि समाज को सुन्दर एवं सुदृढ़ बनाने के लिये समाज के सभी वर्गों को समान अधिकार होना चाहिए।

कबीर के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मानव मान के प्रेमी थे तथा सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को देखकर वे दबीभूत हो जाते थे, जो कि निश्चित रूप से संत व्यक्तित्व के लक्षण हैं। उनके समस्त चिन्तन तथा क्रिया-कलाप का आधार समाज में व्याप्त समस्याओं का उन्मूलन करना ही था। उन्होंने मिथ्या आडम्बर एवं पाखंडों का विरोध करके अन्तःकरण की शुद्धि पर बल दिया।

आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य में बुराई को नष्ट कर नया मानव पैदा करने का संकेत मिलता है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज के कल्याण को मानते हैं। कबीर की भांती आचार्य महाप्रज्ञ ने भी सामाजिक कुरीतियों तथा दहेजप्रथा, पर्दा-प्रथा, व्यसन, महिलाओं के प्रति हिंसा, भ्रूणहत्या, मांसाहार एवं शाकाहार, हिंसा-अहिंसा एवं राजनीति आदि पर अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए हैं। निःसंदेह कबीर एवं आचार्य महाप्रज्ञ की अवतरणा समाज कल्याण हेतु ही हुई है। प्रस्तुत शोधग्रंथ द्वारा कबीर एवं आचार्य महाप्रज्ञ के समाज कल्याण दर्शन को मानव जाति के कल्याणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।



रूपये 995/-

पकाएक

लिटरेरी सर्किल



सी-12/13, प्रथम तला, खण्डेलवाल गर्ल्स कॉलेज के सामने,
संसार चन्द्र रोड़, जयपुर - 302001

ईमेल - literarycirclejpr@yahoo.com

FAMOUS INDIA NATION'S WHO'S WHO

Rohit Gupta
(Editor, 2011 Edition)

Preface

After a long gap we are proud to present once again the latest edition of our 'Famous India : Nation's Who's Who'.

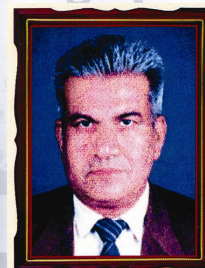
This title is a compilation of short biographies of Indians engaged in diverse services and occupations and who have left an indelible mark in life or have shown commitment and promise to achieve great laurels in the years ahead.

All the biographies are factual in nature and based on first-hand information obtained from the biographies and duly authenticated by them subsequent to compilation of the data as per our editorial policy and style.

This newest edition of the title contains approximately 1080 entries.

We would like to thank the biographies and all others engaged in this project for their time and keen interest in this proud venture.

Biographies



Prof. (Dr.) Sohan Raj Tater

BE (Mech), ME (PH), MA (Phill), PhD, DLitt (Educ), DSc (Yoga); Educationist & Writer; b July 5, 1947 Jasol; m Laxmidevi, three s; Retd Suptdg Engr, Public Health Engg Dept, Rajasthan; ex-Vice-Chancellor, Singhania Univ, Pachheri Bari; ex-Director, Brahmi Vidyapeeth College, Ladnun; ex-Hon Convenor, Pamarthik Shikshan Sanstha, Ladnun; Observer, Digamber Jain Trilok Sodh Sansthan, Hastinapur; Arbitrator, Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad, Ladnun; Adviser & Patron, Siwanchi Malani Regional Terapanthi; Sanstha, Balotra; Ch Patron & Life Member, U.P. Naturopathy & Yoga Teachers & Physicians Assn, Lucknow; Patron & Life Member, Akhil Bhartiya Darshan Parishad, Jabalpur; Life Member & Upasak, Jain Swetamber Terapanthi Mahasabha, Kolkata; Life Member : India Soc of Gandhian Studies, Chandigarh, Indian Academy of Yoga, Varanasi, M.B.M. Engg College Alumni Assn, Jodhpur, Jain Vishva Bharti Ladnun (and ex-dy Secy), Anuvrat Vishva Bharati, Rajsamand, All India Oriental Conference, Pune, Terapanth Professionals Forum, Mumbai, Acharya Tulsi Shanti Pratishthan, Gangashahar, India Soc of U3A, Rajasthan Pensioners Assn; ex-Hon Member, Vidwat Parishad, Jain Vishva Bharati Univ, Ladnun; Member: International Assn of Lions Clubs, Jodhpur West 1989, Vikas Parishad, Delhi, Amrit Sansad, Delhi; Assoc Member, Council for Research & Philosophy, Washington DC (USA); ex-Hon Editor Preksha Dhyam (magazine); participated in many national and international conferences/seminars/workshops; publs-The Jaina Doctrine of Karma and the Science of Genetics; Enlightened Knowledge; Jainagamo Aur Upanishado Ki Aachar Mimamsa; Jaina Karma Mimamsa Shastriya Evam Vaigyanik Adhyayan; Quotes of Mahatma Gandhi; Chronological Biography of Mahatma Gandhi; Bhartiya Bhotikvad Aur Markshvad; Charvak Aur Hume: Kabir Aur Mahapragya Ka Samaj Kalyan Darshan; Gyan Mimamsa, Gyan Rasmiyon, Bhartiya Darshan Ki Molik Audhama, Bach Flower Remedy, Yoga Therapy, Medical Application of Yoga, Yoga Kiran, Yoga Aum Smagra, Swasthya, Gandhi and the Geeta, Jain Karma Vigyan Aum Manovigyan; 26 articles in online international magazine; and 22 articles published in national research journals; Awards Rajasthan Govt. Award 1970, 1976, 1985, 1991, Yuvak Ratna 1987, Samaj Seva Puraskar 2008, Jasol Gaurav, Indira Gandhi Rashtriya Ekta Award, Jain Gyan Vigyan Manishi, Gem of Yoga, Samrasta Excellency Award; Address G-8 Multan Kunj, Bhagat Ki Kothi Extension, Jodhpur 342003. E-mail: sohan_tater@yahoo.co.in

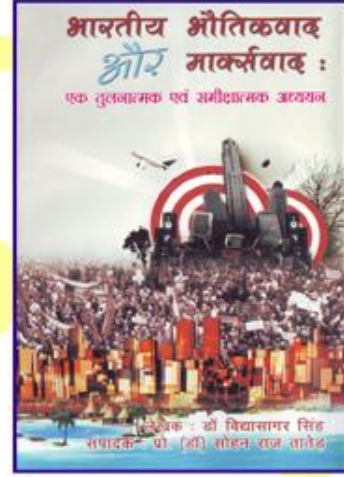
Reguerdon Inc.

1369 Kashmere Gate, Delhi 110006, India
Email: reguerdon@gmail.com

भारतीय भौतिकवाद और मार्क्सवाद :

एक तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन

लेखक- डॉ. विद्यासागर सिंह
संपादक- प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़



इस शोध ग्रन्थ के माध्यम से चार्वक और मार्क्स के दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन कर यह शोध की गई है कि उनके सिद्धान्त किस प्रकार मानव जाति को लाभान्वित कर रहे हैं। चार्वक के अनुसार विश्व भौतिक तत्वों से निर्मित है। उनके अनुसार जीव अथवा आत्मा भूत का ही गुण है और चार तत्वों तथा भूतों (पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु) से दुनिया की उत्पत्ति हुई। चार्वक ने पदार्थ से चेतना की उत्पत्ति द्वन्द्ववादी पद्धति से व्याख्यायित की है। दोनों ने विश्व की व्याख्या शुद्ध भौतिकवादी तरीके से की है।

चेतना को चार्वक ने जीव या मनुष्य के देह से भिन्न तत्व नहीं माना है किन्तु मार्क्स ने उसे भिन्न तत्व माना है। चार्वक ने चारों तत्वों को ही अंतिम और चरम माना है जबकि मार्क्स ने वैज्ञानिकों द्वारा खोज किये गये 108 तत्वों से भी अधिक सभी को मान्य किया है। इस प्रकार मार्क्स का तत्व मीमांसीय सिद्धान्त चार्वक की तत्व मीमांसा से अधिक विकसित एवं समीचीन है। भारतीय भौतिकवाद और मार्क्सवाद अध्यात्म के विरोधी नहीं हैं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं, दोनों के सामंजस्य के बिना आनन्द की प्राप्ति संभव नहीं है। दोनों में अवस्था विशेष का अन्तर मानने से और दोनों की दशा और दिशा अध्यात्म की ओर होने का दावा स्वीकार करने पर ही समन्वयवादी समाज एवं विश्व व्यवस्था कायम रह सकती है इसी से मानव का कल्याण संभव हो सकता है।

डॉ. विद्यासागर सिंह

जन्म तिथि : 15 जून, 1952
शैक्षणिक योग्यता : पी-एच.डी., डी.लिट.
माता का नाम : स्व. बच्ची देवी
पिता का नाम : स्व. विन्देश्वरी सिंह, जा. पो. रामदीरी,
(नकटी) बेगूसराय
कार्यक्षेत्र : व्याख्याता, दर्शन शास्त्र विभाग, रामचरित्र सिंह स्मारक महाविद्यालय, बीहट पूर्व सदर, जिला युवा छात्र संघर्ष समिति, जिला मंत्री, लोकनायक जयप्रकाश नारायण विष्णु मंच बेगूसराय
व्युत्पत्ति प्रकाशनालय : भारतीय भौतिकवाद और मार्क्सवाद : एक तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन चार्वक एवं ह्यूम : एक तुलनात्मक दार्शनिक अध्ययन दर्शन-नवनीत एवं अन्य आलेख
सम्पर्क सूत्र : अध्यक्ष, दर्शन शास्त्र विभाग, रामचरित्र सिंह स्मारक महाविद्यालय, बीहट-851135, जिला - बेगूसराय(बिहार)

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

(जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पठेरी बड़ी (झुंझुनू-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पी-एच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में डॉ. तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छपूर्वक निवृत्ति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में एसोसिएट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं।

जाने माने विद्वान प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 12 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किये। आप इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एक्सट्रा एवार्ड, युवक रत्न, जैन ज्ञान विद्वान मन्त्री, योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।



RADHA PUBLICATIONS

4231/1, Ansari Road, Daryaganj,
Delhi 110 002
Tel: 23247003, 23254306
website : radhapublications.com

Rs. 750/-

ISBN 81-7487-664-2



9 788174 876645



भारतीय दर्शन की मौलिक अवधारणाएं

लेखक



प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़



डॉ. विद्यासागर सिंह

ISBN 81-8182-082-7

पुस्तक के संबंध में

भारतीय दर्शन में सामान्यतः दो धाराएं दीख पड़ती हैं - आत्मवाद एवं अनात्मवाद। आत्मवाद के अंतर्गत समस्त हिन्दू दर्शन हैं और अनात्मवाद में बौद्ध तथा चार्वाक दर्शन हैं। जैन दर्शन दोनों का सम्मूचय करता है। पारमार्थिक दृष्टि से केवल आत्मा ही सत्य है और सब मिथ्या है। आत्मा का खंडन नहीं हो सकता है। आत्मा सच्चिदानन्द है। सच्चिदानन्द शब्द का अर्थ सत् (Existence) चित् (Consciousness) और आनन्द (Bliss) से युक्त होना है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में कार्य-कारण संबंध, पुरुषार्थ, कर्म एवं पुनर्जन्म, बन्ध एवं मोक्ष, मायावाद, सुखवाद, विज्ञान, दर्शन, धर्म, आध्यात्म, भौतिकवाद आदि भारतीय दर्शन की मौलिक अवधारणाओं का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है।

प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ में विज्ञान, दर्शन, धर्म, अध्यात्म को केन्द्र में रखकर भारतीय दर्शन की मौलिक अवधारणाओं की विवेचना की गई है। इस शोध-ग्रन्थ में प्राचीन समय की परिस्थितियों, मान्यताओं, प्रथाओं, समस्याओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान खोजा गया है। शोध-ग्रन्थ दर्शन जगत के विद्वानों, शोधार्थियों, साहित्यकारों एवं पाठकों के सामने प्रस्तुत है। उनकी सन्तुष्टि में ही लेखक द्वय की सफलता है।

लेखक परिचय

डॉ. विद्यासागर सिंह

जन्म तिथि-15 जून, 1952

शैक्षणिक योग्यता-पी.एच.डी., डी.लिट

माता का नाम- स्व. बच्ची देवी

पिता का नाम- स्व. विन्देश्वरी सिंह

ग्राम पोस्ट रामदीरी, (नकटी) बेगूसराय

कार्यक्षेत्र - व्याख्याता, दर्शन शास्त्र विभाग, रामचरित्रसिंह स्मारक महाविद्यालय, बीहट

पूर्व सदस्य, जिला छात्र संघर्ष समिति

जिला मंत्री, लोकनायक जयप्रकाश नारायण निष्ठा मंच, बेगूसराय

कृतियां प्रकाशनार्थ -

भारतीय भौतिकवाद और मार्क्सवाद

चार्वाक एवं ह्यूम

ज्ञान मीमांसा की समीक्षात्मक विवेचना (प्राच्य और पाश्चात्य)

भारतीय दर्शन में तत्व एवं आचार मीमांसा

प्राच्य और पाश्चात्य दर्शनों की मौलिक अवधारणाएं

सम्पर्क सूत्र-

डॉ. विद्यासागर सिंह

अध्यक्ष, दर्शन शास्त्र विभाग

रामचरित्रसिंह स्मारक महाविद्यालय

बीहट-851135 जिला- बेगूसराय, (बिहार)

ISBN 818182082-7



9 788182 082082

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

(जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंधानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाइनू (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंधानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं।

जाने माने विद्वान प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 12 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिलिखित राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, राष्ट्रीय समरसता ऐक्सिलेंसी अवार्ड, युवकरन, जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।

प्रकाशक

लिटरेरी सर्किल

सी.12/13, प्रथम तला,

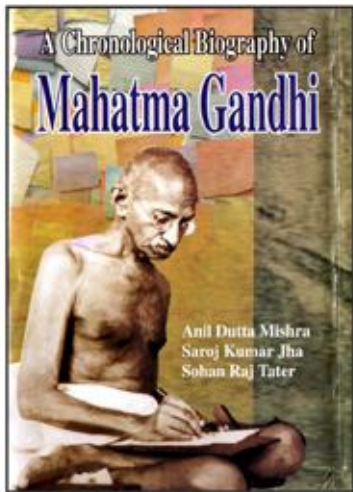
खण्डेलवाल गर्ल्स कॉलेज के सामने,

संसार चन्द्र रोड़,

जयपुर - 302001

ईमेल - literarycirclejpr@yahoo.com





A Chronological Biography of Mahatma Gandhi

By
Anil Dutta Mishra
Saroj Kumar Jha
Sohan Raj Tater

Contents

This work is an outcome of collective endeavour of three individuals with one goal to understand Gandhi and place the facts for present and future generations for bringing ethical values and self-esteem in them.

Gandhi's life was an open book. He combined facts with value, theory with practice, body with soul. He conducted experiments after experiments to achieve the final goal. On the basis of Nonviolence, Satyagraha, Swadeshi and Swaraj he laid the freedom struggle of India and showed way to the world.

Gandhi was a man of principles and great convictions and always practiced what he preached. Once, when asked for a message to humanity, Gandhi said, "*My life is my message*". He lived a very simple life with very few wants and needs, what he believed in and said, hold true even today in the era of globalization.

Mahatma Gandhi, a multifaceted genius, applied his mind to a large number of human concerns and left an indelible impact on the social, economic and political forces of the day. He left an everlasting impact on the world at large because he always spoke and understood the language of the masses and downtrodden. He made the people fearless to fight against injustice and exploitation. He was a man far ahead of his times. Voices all over the world today are re-echoing.

This book provides detail chronological biography of Mahatma Gandhi, the greatest man this motherland had given birth. It also gives a detail account of Mahatma Gandhi's life and action starting from 2nd October 1869 till his death 30th January 1948.

This book will be very useful for laymen, students, research scholars, policy makers, politicians and social workers.

23 cm Cloth 2010 Rs. 1550
ISBN 978-93-80031-52-1

Dr. Anil Dutta Mishra is noted gandhian Scholar and Dy. Director, National Gandhi Museum, Rajghat, New Delhi.

Prof. Saroj Kumar Jha is Sr. Assistant Professor of Business Management, Department of Agricultural Economics, Rajendra Agricultural University, Pusa, Bihar.

Dr. Sohan Raj Tater is Pro Vice Chancellor of Singhania University, Rajasthan.



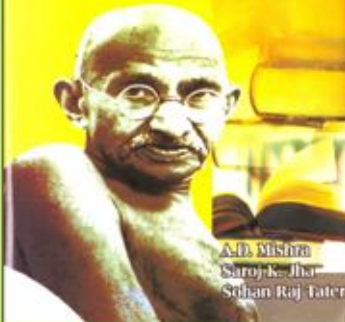
ABHIJEET PUBLICATIONS

2/46 Tughmeerpur Extension, Delhi 110 094
Tel: 011-65698474, 22960492
e-mail: abhijeetpublication@gmail.com
abhijeet_singh1@indiatimes.com

ISBN : 978-93-80031-52-1



Gandhi and The Geeta



Gandhi and The Geeta

By
A.D. Mishra
Saroj K. Jha
Sohan Raj Tater

Contents

Mohandas Karam Chand Gandhi popularly known as Mahatma Gandhi had become acquainted with the Bhagavad Gita during his student days in London. His study of the Gita grew and deepened along with his involvement in public life and freedom struggles. In South Africa where Gandhi spent 21 years of youthful life started living his life according to the tenets of the Gita and had taken to it as his primary source of ethical, moral and spiritual inspiration. He applied teaching of Gita in the political, social and economic fields. In fact, Gandhi used the teaching of Gita to provide leadership to the Indian masses by upholding the ethical values in public and private life. Gandhi called the Gita as 'mother', 'Kamadhenu', 'Spiritual dictionary', 'dictionary of references for the solution of all troubles and trials', 'the Book of life', his 'refuge' and so on. He himself said that his "life is based on the teaching of the Gita". Gita became Gandhi's friend, philosopher and guide in practically all matters. Gandhi extensively studied, wrote and spoke on the various facets and teaching of the Gita and applied in day-to-day affairs as well as in freedom struggle. Gandhi gives very comprehensive, contemporary and relevant meanings and interpretation of the Gita's philosophy and teachings.

In 1926 in the Satyagraha Ashram, Sabarmati Gandhi delivered 218 discourses in Gujarati on Gita. These discourses are relevant for contemporary management expert who only believes in Western theories.

Dr. Anil Dutta Mishra is noted gandhian Scholar and Dy. Director, National Gandhi Museum, Rajghat, New Delhi.

Prof. Saroj Kumar Jha is Sr. Assistant Professor of Business Management, Department of Agricultural Economics, Rajendra Agricultural University, Pusa, Bihar.

Dr. Sohan Raj Tater is Pro Vice Chancellor of Singhania University, Rajasthan.

Rs. -1400/-



ABHIJEET PUBLICATIONS

2/46 Tughmeerpur Extension, Delhi 110 094
Tel: 011-65698474, 22960492
e-mail: abhijeetpublication@gmail.com
abhijeet_singh1@indiatimes.com

ISBN : 978-93-80031-83-5



9 789380 031835

कर्म मीमांसा :
जैव धर्म के परिप्रेक्ष्य में शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक अध्ययन



प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़
डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी

कर्म मीमांसा :

(जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में
शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक
अध्ययन)

ISBN - 978-81-7711-275-7

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़
डॉ राकेशमणि त्रिपाठी

पुस्तक के संबंध में

जीवित प्राणी के व्यक्तित्व एवं शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक किरा-कलापों के संचालन के मुख्य दो घटक कार्य करते हैं- कर्म एवं जीन्स। ये दोनों घटक उनकी संरचना में एक दूसरे के विपरीत जान पड़ते हैं लेकिन दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इस शोध-ग्रन्थ में कर्म सिद्धान्त एवं आनुवांशिकी विज्ञान का तुलनात्मक अद्वयन किरा गया है।

इस शोध-ग्रन्थ में भारतीय दर्शनों एवं विशेष रूप से जैन दर्शन में कर्म की अवधारणा पर विस्तृत में प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ में जैन दर्शन में कर्मों का वर्गीकरण, बंध, विपाक, निर्जरा, मोक्ष आदि का विस्तृत में स्पष्टीकरण किरा गया है। इस शोध-ग्रन्थ में आनुवांशिकी विज्ञान के तथ्यों जीन्स, डी. एन. ए., आर. एन. ए. की कार्यप्रणाली पर विस्तार से चर्चा करते हुए कर्म एवं जीन्स का तुलनात्मक अद्वयन किरा गया है। तुलनात्मक अद्वयन से यह संभावना जास्रि की गई है कि कर्म कारण है तथा जीन्स उनके कार्य हैं। कर्म ही जीन्स को आदेश, निर्देश देकर प्राणी की गतिविधियों का संचालन करते हैं। दर्शन जगत् के विद्वानों, शोधार्थियों, सांख्यिकारों एवं पाठकों के सामने शोध-ग्रन्थ प्रस्तुत है। उनकी संतुष्टि में ही लेखक द्रव की सफलता है।



प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ (जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंधानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंधानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.

डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं।

जाने माने विद्वान प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 12 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, राष्ट्रीय समरसता ऐक्सिलेंसी अवार्ड, युवक रत्न, जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।



नाम : डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी
जन्म तिथि : 5 जुलाई, 1961
शैक्षणिक योग्यता : एम.ए. (दर्शन प्राकृत), साहित्याचार्य, पी-एच.डी.
रुचियाँ : संस्कृत और हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य, आकाशवाणी से समसामयिक विषयों का प्रसारण।
सम्मान : 'अणवत शिक्षक सम्मान' से सम्मानित।

शोध-पत्र प्रकाशित : 15
कृतियाँ प्रकाशनार्थ : जैन आगमों और उपनिषदों की आचार मीमांसा, जैन कर्म मीमांसा : शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक अध्ययन छंदोलंकार विवेचन

सम्पर्क सूत्र : डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी
व्याख्याता, संस्कृत
ब्राह्मी विद्यापीठ महाविद्यालय
लाडनू - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
मो. 9982088746

ISBN 978-81-7711-275-7



Rs. 500.00



प्रकाशक
साहित्यागार
958, धामाणी मार्केट की गली,
चौड़ा रास्ता, जयपुर

जैन आगमों और उपनिषदों की आचार मीमांसा

डॉ राकेशमणि त्रिपाठी
प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़

ISBN - 81-88289-42-6

जैन आगमों और उपनिषदों की
आचार मीमांसा



डॉ राकेशमणि त्रिपाठी
डॉ सोहन राज तातेड़

पुस्तक के संबंध में

उपनिषदों और आगमों में साम्य और वैषम्य, दोनों देखने को मिलता है। आगमों में अहिंसा पर अधिक बल दिया गया है तथा उपनिषदों में ज्ञान पर। जैन और वैदिक दोनों परम्पराओं में मुक्ति को जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। आगमों में आचार-मीमांसा को केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। भारतीय दर्शन के सभी सम्प्रदाय अपना स्रोत उपनिषदों में खोजते हैं। उपनिषदों और आगमों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन समान रूप से निर्दिष्ट है। तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर वैदिक ग्रन्थों में संस्कारों का जितनी विशदता और प्रमुखता से वर्णन प्राप्त है, उतना आगमों में नहीं है। आत्मा और परमात्मा के साक्षात्कार का प्रमुख साधन वेदान्त में ज्ञान है, जबकि जैन दर्शन में आत्मा के परमात्मा पद को प्राप्त करने का प्रमुख साधन चरित्र है।

दृष्ट और भाव, दोनों रूपों में आचरण का सम्यक् होना आवश्यक है। ज्ञान सम्पन्न होते हुए भी मानव आसक्ति के वशीभूत होकर आश्रव के माध्यम से कर्म-पुद्गलों का संचय कर इस संसार सागर में अन्तहीन यात्रा का पथिक बना हुआ है। ज्ञान से अज्ञान दूर होता है। शास्त्र-प्रतिपादित ज्ञान और तदनुकूल आचरण ही श्रेष्ठ मार्ग है, जो मानव को अपने गन्तव्य तक पहुँचा सकता है। चरित्र की पृष्ठभूमि आचार ही है। आचारवान् पुरुष ही विद्वान् होता है। उपनिषदों का सारभूत ग्रन्थ गीता में कहे गए - ज्ञान रूपी अग्नि सभी कर्मों को मष्ण कर देती है।

इस शोध-ग्रन्थ के माध्यम से वैदिक, सभी भारतीय दर्शनों एवं श्रमण परम्परा में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया है। आशा है, विद्वान्गण इस तुलनात्मक अध्ययन को स्वीकार कर हमें कृतार्थ करेंगे।

लेखक-परिचय

नाम : डॉ. सोहन राज तातेड़

जन्म तिथि एवं निवास : 5 जुलाई, 1947, जोधपुर (राज.)

शैक्षणिक योग्यता : बी.ई. (मैकेनिकल), एम.ए. (जैनेलोजी), पी-एच.डी., डी.लिट. (अध्ययनरत)

पद : ● मानद सलाहकार, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ (राज.) ● मानद संयोजक, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, लाडनूँ (राज.)

कार्यक्षेत्र : राजस्थान सरकार के पी.एच.ई.डी. विभाग में 30 वर्षों तक विभिन्न अभियन्ता पदों पर कार्य करते हुए अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति ● प्रेक्षाएतान, जीवन-विज्ञान एवं योग में सर्टिफिकेट कोर्स ● जीवनदानी वानप्रस्थाश्रम साधक ● पूर्व सदस्य, विद्वत् परिषद्, जैन विश्वभारती, लाडनूँ (राज.) ● मानद निदेशक, ब्राह्मी विद्यापीठ महाविद्यालय, लाडनूँ (राज.) ● मानद सम्पादक, प्रेक्षाएतान पत्रिका ● अद्ययापन कार्य, पुस्तकें एवं शोध-पत्र लिखना व प्रकाशित करवाना, राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता

विदेश यात्रा : जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया एवं मूटान

सम्मान : अखिल भारतीय तैरापथ युवक परिषद् द्वारा वर्ष 1987 में 'युवक रत्न' अलंकरण ● राजस्थान सरकार द्वारा पी.एच.ई.डी. विभाग में निष्ठापूर्वक सेवा सम्पादन के लिए वर्षों 1970, 1976, 1984 एवं 1991 में सम्मानित ● अमृत योगक्षेम कोष सिवाकासी (तमिलनाडु) द्वारा तैरापथ समाज का 'समाज सेवा पुरस्कार' घोषित ● जसोल जैन विकास मंच, सूरत द्वारा 'जसोलगौरव' अलंकरण

अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध-पत्र प्रस्तुत : 33

शोध-पत्र प्रकाशित : 40

कृतिया प्रकाशनार्थ : ● The Jaina Doctrine of Karma and the Science of Genetics & Enlightened Knowledge

● जैन आगमों और उपनिषदों की आचार मीमांसा

● जैन कर्म मीमांसा : शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक अध्ययन

प्रथम संस्करण - 2011

मूल्य - 400/-



प्रकाशक
विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर

247, जवाहरगंज, सागर 470002 (म.प्र.)

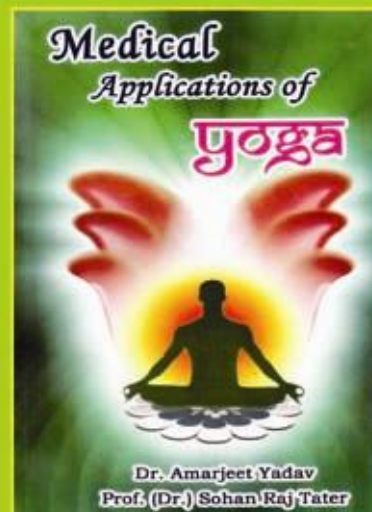
दूरभाष : 09303282494, 09926535098

visit - vishwavidyalayaprakashansagar.blogspot.com

Medical Application of Yoga

Dr. Amarjeet Yadav
Prof.(Dr.) Sohan Raj Tater

ISBN 978-81-906929-9-1



Dr. Amarjeet Yadav : M.Sc. (Yoga), Ph.D. (Yoga), D.Sc. (Honris Causa), is a faculty member in the Course of Naturopathy and Yoga, University of Lucknow. He has to his credit many research papers that have been published in various national and International journals. Dr. Yadav is a distinguished member expert of many national and International level organizations and has contributed to the knowledge of Yoga and Naturopathy in various universities by sharing his vast experience, research work and knowledge with students. He is actively involved in various research projects related to the subject and is rendering his services for the betterment and development of Yoga and Naturopathy in all possible ways.

Prof. (Dr.) Sohan Raj Tater : (b. 1947) is former Vice Chancellor, Singhania University, Pacheri Bari (Jhunjhunu), Rajasthan and former Adviser, Jain Vishva Bharati University, Ladnun (Raj.). He is Emeritus Professor in Jodhpur National and Singhania University. He is registered Research Supervisor in Universities in subjects - Philosophy, Yoga and Education. Earlier he served in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for 30 years and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer. He is Associate member, Patron and Life member in various Academic/Social institutes in India and Abroad. He has traveled abroad-Japan, Germany, South Korea, Nepal and Bhutan countries.

A well-known scholar Prof. (Dr.) Sohan Raj Tater has written and got published 8 books and 12 books are under publication in his subjects - Philosophy, Yoga and Education. Besides this his more than 50 Research papers published in National and International journals of repute. Also, he has participated in more than 50 seminars, conferences, workshops, symposias and Endowment Lectures in India and Abroad. He has been awarded with Indira Gandhi Rastriya Akta Award, Yuvak Ratna, Jain Gyan Vigyan Manishi, Rastriya Samrasta Excellency Award, Samaj

In the ancient time man used to live in the midst of nature. As a result he was master of health, personality, excellence, contentment and pleasure. On the other hand as on today advancement of science and technology has brought forth a heap of option for physical comfort, in which there is least possibility of healthy living.

Yoga is a subject of science of high order, which carries in it the mystery of conservation of health and transformation of life. A complete expression of life is possible only through yoga. Yoga is a holistic therapy which aims at achieving overall physical, mental and spiritual well being.

The human body is a complex creation of nature. It is made up of many complex systems working together in harmony. If any of the systems faults, the entire machinery starts to suffer. In order to maintain proper functioning of all systems it is important to do proper maintenance of the body so that it remains healthy throughout life. In this book it is described that with so many Medical Applications of Yoga like, Yam, Niyam, Asan, Pranayam, Pratyahar, Dharna and Samadhi physical, emotional, spiritual and social total health can be achieved.

AVINASH PAPERBACKS

An Imprint of Abhijeet Publications
2/46 Tukhmeerpur Extension
Delhi-110 094
Tel: 011-22960492, 65698474
E-mail: abhijeetpublication@gmail.com
Abhijeet_singh1@indiatimes.com



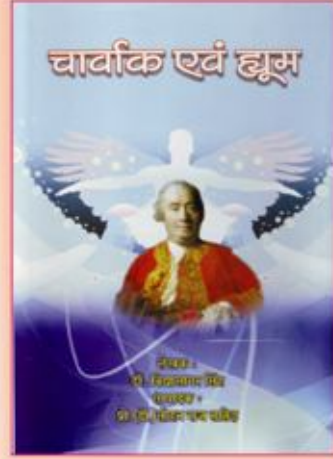
चार्वक एवं ह्यूम

पुस्तक के संबंध में

भारतीय दर्शनों वेद, उपनिषद्, पुराण, महाभारत, रामायण आदि में भी भौतिकवादी तथा बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो ह्यूम से मिलती-जुलती हैं। स्पष्ट रूप से इन्द्रियानुभव पर आधारित भौतिकवाद का जन्मदाता चार्वक को ही माना जा सकता है। चार्वक मत प्रवृत्ति मार्ग का प्रबल समर्थक है। यह निवृत्ति मार्ग का विरोधी है। ह्यूम शब्द अनुभववादी थे। अतः वे केवल प्रभावों एवं प्रत्ययों को मानते थे। उन्होंने मात्र प्रत्यक्ष की सत्ता को ही स्वीकार किया है। ह्यूम के अनुसार मनुष्य का नैतिक मापदण्ड भाव है। भाव दो प्रकार के हैं - सुख और दुःख। जो ऐच्छिक कर्म सुखदायक हैं वे शुभ हैं और जो दुःखदायक हैं वे अशुभ हैं। जो व्यक्ति और समाज दोनों को अच्छा लगे वही नियम है, वही मापदण्ड है, वही नैतिकता है। मनुष्य की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए इन्होंने खुले व्यवसाय का समर्थन किया। ह्यूम के अनुसार धर्म मानसिक अभ्यास मात्र है। ईश्वर मनुष्य की कल्पना की उपज है।

चार्वक के अनुसार ज्ञान का एक मात्र विश्वसनीय प्रमाण प्रत्यक्ष ही है। चार्वक के अनुसार जड़ पदार्थ ही मूल है। उनसे ही दुनिया की उत्पत्ति हुई है। चार्वक के अनुसार पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि ही जगत् का मूल कारण है। आकाश का अस्तित्व नहीं है। अतः स्पष्ट है कि जीवन और चेतना गौण हैं क्योंकि इसका उद्भव और विकास इन भूतों से हुआ है। अमर आत्मा नाम की कोई चीज नहीं है। इनके अनुसार शरीर ही आत्मा है। शरीर के नष्ट हो जाने पर आत्मा या चेतना का भी नाश हो जाता है। जगत् का निर्माण अपने आप होता है। चार्वक का कहना है कि ईश्वर को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरी बात यह है कि ईश्वर का प्रत्यक्ष नहीं होता है इसलिए इसकी सत्ता को अस्वीकार करना स्वाभाविक है।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में चार्वक और ह्यूम के सिद्धान्तों का दार्शनिक अध्ययन हर पहलू से बहुत सुंदर ढंग से



डॉ. विघ्नसागर सिंह

लेखक परिचय



प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

जन्म तिथि - 15 जून, 1952
शैक्षणिक योग्यता - पी.एच.डी., डी.लिट्
माता का नाम - स्व. बच्चू देवी
पिता का नाम - स्व. विन्देश्वरी सिंह
ग्राम पोस्ट रामदारी, (नकटी) बेगूसराय
कार्यक्षेत्र - व्याख्याता, दर्शन शास्त्र विभाग, रामचरित्रसिंह स्मारक महाविद्यालय, बीहट
पूर्व सदस्य, जिला छात्र संघर्ष समिति
जिला मंत्री, लोकनायक जयप्रकाश नारायण निष्ठा मंच, बेगूसराय
कृतियां प्रकाशनार्थ -
भारतीय भौतिकवाद और मार्क्सवाद
चार्वक एवं ह्यूम
ज्ञान मीमांसा की समीक्षात्मक विवेचना (प्राच्य और पाश्चात्य)
भारतीय दर्शन में तत्व एवं आचार मीमांसा
प्राच्य और पाश्चात्य दर्शनों की मौलिक अवधारणाएं
भारतीय दर्शन की मौलिक अवधारणाएं
सम्पर्क सूत्र -
डॉ. विघ्नसागर सिंह
अध्यक्ष, दर्शन शास्त्र विभाग
रामचरित्रसिंह स्मारक महाविद्यालय
बीहट-851135 जिला- बेगूसराय, (बिहार)

प्रथम संस्करण : 2010
मूल्य : एक सौ पचास रुपये मात्र (150.00)

ISBN : 81-86103

(जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंधानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंधानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं।

जाने माने विद्वान प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 12 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, राष्ट्रीय समरसता ऐकसीलेंसी अवार्ड, युवक रत्न, जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।

प्रकाशक

राजस्थानी ग्रन्थसागर

प्रकाशक एवं वितरक
सोजनी गेट, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-2657531(O), 2623933 (O)
ईमेल - info@rgbooks.net वेबसाइट - www.rgbooks.net

ज्ञान मीमांसा की समीक्षात्मक विवेचना

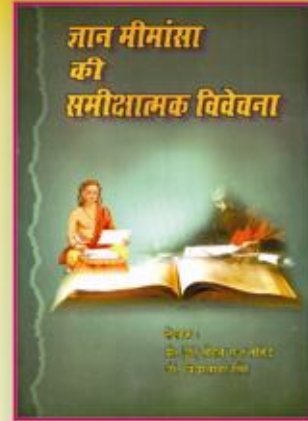
लेखक



प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़



डॉ. विद्यासागर सिंह



पुस्तक के संबंध में

बुद्धिजन्य ज्ञान ही सदैव असंदिग्ध एवं सत्य होता है। इन्द्रियों तो प्रायः असत्य को सत्य बतलाती हैं। इसलिए उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। आत्मा का सार तत्व विचार है इसलिए बुद्धि हमारे मानसिक जीवन का सार अंश है। बुद्धि अपने आप ज्ञान का विकास करती है। बुद्धि के द्वारा हमें यथार्थ और असंदिग्ध ज्ञान मिलता है। सुप्रसिद्ध दार्शनिक शंकर, रामानुज, सुकरात एवं प्लेटो की दृष्टि में इन्द्रियानुभव नहीं बल्कि अनुभवातीत ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है और यही ज्ञान मीमांसा की समीक्षात्मक विवेचना है। डॉ. राधाकृष्णन् ने भी बुद्धि की जगह अन्तर्बोध अथवा अन्तर्चेतना को अधिक महत्व दिया। सीखने का अर्थ एवं प्रक्रिया के साथ-साथ ज्ञान की मौलिक स्थिति की चर्चा करते हुए सुकरात ने बतलाया है कि, 'गुरु शिष्य को कोई नवीन ज्ञान नहीं देता बल्कि उसकी आवृत्त बुद्धि को अनावृत्त कर देता है।' जैन दर्शन के अनुसार आत्मा में अनन्त ज्ञान है लेकिन ज्ञानावरणीय कर्म उसे आवृत्त (ढक) कर देते हैं। प्राणी जब अपनी आत्मशक्ति के बल पर प्रबल पुरुषार्थ करता है तो ज्ञानावरणीय कर्मों का पूर्ण क्षय होने पर आत्मा अनन्त ज्ञान (केवल ज्ञान) को प्राप्त कर लेती है तथा ऐसी स्थिति में भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की हर जीव-अजीव की हर पर्याय को जान लेती है। ज्ञान-पिपासु विद्वानों एवं शोध विद्यार्थियों के समक्ष यह शोध ग्रन्थ उनकी ज्ञान-पीपासा को शांत करने हेतु प्रस्तुत है। इस शोध ग्रन्थ के माध्यम से विभिन्न दर्शनों द्वारा ज्ञान की जो मीमांसा की गई है उसकी समीक्षात्मक विवेचना प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया जा रहा है। आशा है विद्वान्गण, विद्वत समाज एवं जिज्ञासु पाठकगण इस विवेचना को स्वीकार कर हमें कृतार्थ करेंगे।

लेखक परिचय

डॉ. विद्यासागर सिंह

जन्म तिथि-15 जून, 1952
शैक्षणिक योग्यता-पी.एच.डी., डी.लिट
माता का नाम- स्व. बच्ची देवी
पिता का नाम- स्व. विन्देश्वरी सिंह
ग्राम पोस्ट रामद्वीरी, (नकटी) बेगूसराय
कार्यक्षेत्र - व्याख्याता, दर्शन शास्त्र विभाग, रामचरित्रसिंह स्मारक महाविद्यालय, बीहट
पूर्व सदस्य, जिला छात्र संघर्ष समिति
जिला मंत्री, लोकनायक जयप्रकाश नारायण निष्ठा मंच, बेगूसराय
कृतियां प्रकाशनार्थ -
भारतीय भौतिकवाद और मार्क्सवाद
चार्वाक एवं ह्यूम
ज्ञान मीमांसा की समीक्षात्मक विवेचना (प्राच्य और पाश्चात्य)
भारतीय दर्शन में तत्व एवं आचार मीमांसा
प्राच्य और पाश्चात्य दर्शनों की मौलिक अवधारणाएं
भारतीय दर्शन की मौलिक अवधारणाएं
सम्पर्क सूत्र-
डॉ. विद्यासागर सिंह
अध्यक्ष, दर्शन शास्त्र विभाग
रामचरित्रसिंह स्मारक महाविद्यालय
बीहट-851135 जिला- बेगूसराय, (बिहार)

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

(जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंधानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (शुंशुन-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंधानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में एसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं।

जाने माने विद्वान प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 12 पुस्तकें प्रकाशनार्थी हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, राष्ट्रीय समरसता ऐक्सीलेंसी अवार्ड, युवकरत्न, जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।

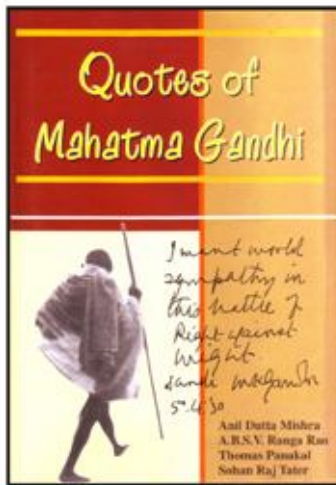
प्रकाशक

राजस्थानी ग्रन्थालय

प्रकाशक एवं वितरक
सोजनी मेड, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-2657531(O), 2623933 (O)
ईमेल - info@rgbooks.net विवेकसाईट - www.rgbooks.net

प्रथम संस्करण : 2010
मूल्य : दो सी रुपये मात्र (200.00)

ISBN : 81-86104



QUOTES OF MAHATMA GANDHI

By: Dr. Anil Dutta Mishra
Dr. A.B.S.V. Ranga Rao
Dr. Thomas Panakal
Dr. Sohan Raj Tater

Contents

Man is the finest creature of Almighty God. Man's Life is not static. Ups and downs, joy and sorrows, rise and fall, fame and defame, pleasure and pain, profit and loss, love and hate are part of every man's life. These are hard realities of life and from which no one can escape. One must learn to live a harmonious, peaceful and dignified life in all circumstances and for that we need eternal-light. The eternal light we get either from religious books or from thoughts, ideas and adventurous life history of great men to inspire our own lives.

If we turn the pages of history we will find ample examples of great men of the world who themselves got inspiration from the great men. Inspiration is eternal light and it is necessary for human being. We must understand that one candle can not remove the darkness of a room but darkness of the whole world combined together can not stop the light of even one candle. One candle will lit another candle and a day will come when whole world will be lit.

Gandhi inspired himself and became Mahatma. He also inspired millions of people during his lifetime, and is still inspiring people around the whole world. His thoughts are everlasting, time tested and written for common man in a simple language.

To make it user friendly, all topics have been arranged in alphabetical order, and moreover at the end of the book all topics have been indexed so that one can search topics and find Quotes of Mahatma Gandhi.

The material for this book has been drawn from the Collected Works of Mahatma Gandhi and other primary sources. This book is an outcome of collaborative efforts of four scholars working at different places since last four years. This book will be very useful for inspiring the young minds to think differently, act differently to bring a positive change in the world. We hope that the objectives with which the book has been compiled will be fulfilled.

23 cm HB 2010 Rs. 320.00
ISBN 978 - 93 - 80031 - 28 - 6

Dr. Anil Dutta Mishra is Deputy Director, National Gandhi Museum, Rajghat, New Delhi.

Dr. A.B.S.V. Ranga Rao is programme coordinator, Gandhian Study Centre, Andhra University, Vishakhapatnam.

Dr. Thomas Panakal is propagating Indian ethos in West, based in Canada.

Dr. Sohan Raj Tater is Pro Vice Chancellor of Singhania University, Rajathan.



ABHIJEET PUBLICATIONS

2/46 Tukhmeerpur Extension, Delhi 110 094
Tel: 011-65698474, 22960492
E-mail: abhijeetpublications@gmail.com
abhijeet_singh1@indiatimes.com

ISBN : 978-93-80031-28-6





Asia Pacific

Who's Who

Volume Tenth

Ravi Bhushan *Compiling Editor*

© 2010 by Rifacimento International. All rights reserved. No. part of this publication may be photocopied, recorded or otherwise reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any electronic or mechanical means without the prior permission of the copyright owners.

Disclaimer : The editors and publisher have used their best endeavors to collect and compile information for inclusion in this volume. Due care has been taken in compiling and cross-checking the information and data before printing this volume. However, in case of any misrepresentation of facts or wrong information, the publisher will not be responsible. They do not assume and hereby disclaim any liability for any damage caused by errors or omissions whether such errors or omissions result from negligence or any other cause.



Tater, Sohan Raj

BE (Mech), ME (PH), MA (Phil), PhD, D Litt (Educ); Educationist & Writer; b July 5, 1947 Jasol; m Laxmidevi, three s; Retd Suptdg Engr, Public Health Engg Dept, Rajasthan; ex-Vice-Chancellor, Singhania Univ, Pachari Bari; ex-Director, Brahma Vidhyapeeth College, Ladnun; ex-Hon Convenor, Pamarthik Shikshan Sanstha, Ladnun; Observer, Digamber Jain Trilok Sodh Sansthan, Hastinapur; Arbitrator, Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad, Ladnun; Adviser & Patron, Siwanchi Malani Regional Terapanthi; Sanstha, Balotra; Ch Patron & Life Member, U.P. Naturopathy & Yoga Teachers & Physicians Asscn, Lucknow; Patron & Life Member, Akhil Bhartiya Darshan Parishad, Jabalpur; Life Member & Upasak, Jain Swetamber Terapanthi Mahasabha, Kolkata; Life Member : Indian Soc of Gandhian Studies, Chandigarh, Indian Academy of Yoga, Varanasi, M.B.M. Engg College Alumni Asscn, Jodhpur, Jain Vishva Bharati Ladnun (and ex-Dy Secy), Anuvrat Vishva Bharati, Rajsamand, All India Oriental Conference, Pune, Terapanth Professionals Forum, Mumbai, Acharya Tulsi Shanti Pratishthan, Gangashahar, Indian Soc of U3A, Rajasthan Pensioners Asscn; ex-Hon Member, Vidwat Parishad, Jain Vishva Bharati, Ladnun; ex-Member, Board of management, Jain Vishva Bharati Univ, Ladnun; Member : International Asscn of Lions Clubs, Jodhpur West 1989, Vikas Parishad, Delhi Amrit Sansad, Delhi; Assoc Member, Council for Research & Philosophy, Washington DC (USA); ex-Hon Editor, Preksha Dhyana (magazine); Participated in many national and international conferences/seminars/workshops; publs - The Jaina Doctrine of Karma and the Science of Genetics; Enlightened Knowledge; Jainagamo Aur Upanishado Ki Aachar Mimamsa; Jaina Karma Mimamsa Shastriya Evam Vaigyanik Adhyayan; Quotes of Mahatmak Gandhi; Chronological Biography of Mahatma Gandhi; Bhartiya Bhotikvad Aur Markshvad; Charvak Aur Hume : Kabir Aur Mahapragya Ka Samaj Kalyan Darshan; 26 articles in online international magazine; and 22 articles published in national research journals; Awards Rajasthan Govt. Award 1970, 1976, 1985, 1991, Yuvak Ratna 1987, Samaj Seva Puraskar 2008, Jasol Gaurav, Indira Gandhi Rashtriya Ekta Award, Jain Gyan Vigyan Manishi, Gem of Yoga, Samrasta Excellency Award; Address G-8 Multan Kunj, Bhagat Ki Kothi Extension, Jodhpur 342003, India. Email: sohan_tater@yahoo.co.in

ISBN 81-901966-2-6

Price : Inland Rs. 6750.00
Overseas US\$ 440.00



Rifacimento International

Published by

Rifacimento International

2nd Floor, 4384/4A, Tulsidass Street, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi 110002, India.

Printed at Images & Impression, New Delhi 110002,
India.

YOGA THERAPY

By

**Sohan Raj Tater
Amarjeet Yadav**

YOGA THERAPY



Sohan Raj Tater
Amarjeet Yadav

Contents

Yoga is India's oldest scientific, perfect spiritual discipline. Yoga is neither a sect nor an ideology but a practical training of mind and body. Yoga is the science of life and the art of living. It offers us simple, easy remedies, techniques and methods of health and hygiene to assure physical and mental fitness with a minimum of time, effort and expense. Total health consists of physical, mental, emotional and spiritual health. Yoga is also a technique for achieving purest form of self-awareness, devoid of all thoughts and sensation.

Nature has its certain universal laws and living according to these natural laws is called an ideal lifestyle. Due to the modern life style person's health is decreasing day by day. Physical and mental disorders are increasing and a large population around the globe is being affected by modern obesity, tension, depression, anxiety etc. and there are not full proof method of permanent cure of these diseases. By adopting Yoga as Therapy using its well proved components - Yama, Niyama, Asana, Pranayama, Pratyahar, Dharna, Dhyana, Samadhi, yogic diet and yogic life style we can permanently cure as well as we can be safe from all these diseases. A regular practice of Yoga 30 to 50 minutes daily with faith in "self", proves a blessing in the form of spiritual illumination which slowly develops into awareness of reality.



Prof. (Dr.) Sohan Raj Tater (b. 1947) is former Vice Chancellor, Singhania University, Pachera Bari (Jhunjhunu), Rajasthan and former Advisor, Jain Vishva Bharati University, Ladnun (Raj.). He is Emeritus Professor in Jodhpur National and Singhania University. He is registered Research Supervisor in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for 30 years and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer. He is Associate member, patron and Life member in various Academic/Social institutes in India and Abroad. He has traveled abroad - Japan, Germany, South Korea and Bhutan countries.

A well-know scholar Prof.(Dr.) Sohan Raj Tater has written and got published 8 books and 12 books are under publication in his subjects - Philosophy, Yoga and Education. Besides this his more than 50 Research papers published in National and International journals of repute. Also, he has participated in more than 50 seminars, conferences, workshops, symposiums and Endowment Lectures in India and Abroad. He has been awarded with Indira Gandhi Rastriya Ekta Award, Yuvak Ratna, Jain Gyan Vigyan Manishi, Rastriya Samrasta Excellency Award and Yoga Ratna National award.



Dr. Amarjeet Yadav M.Sc. (Yoga), Ph.D. (Yoga), D.Sc. (Honoris Causa), is a faculty member in the Course of Naturopathy and Yoga, University of Lucknow. He has to his credit many research paper that have been published in various National and International journals. Dr. Yadav is a distinguished member expert of many national and International level organization and has

contributed to the knowledge of Yoga and Naturopathy in various universities by sharing his vast experience, research project related to the subject and is rendering his services for the betterment and development of Yoga and Naturopathy in all possible ways.

ISBN : 978-81-906929-8-4



9 788190 692984

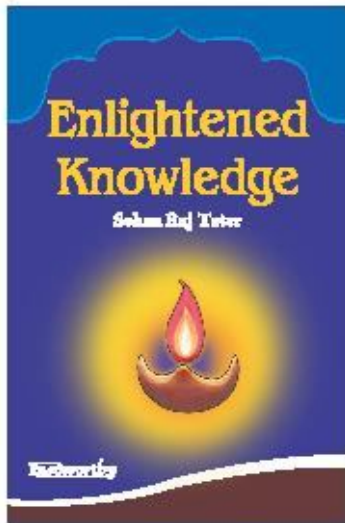
Rs. - 190.00/-



AVINASH PAPERBACKS

An Imprint of abhijeet Publications
2/46 Tukhmeerpur Extension
Delhi 110 094

Tel: 011-22960492, 65698474
e-mail: abhijeetpublication@gmail.com
abhijeet_singh1@indiatimes.com



Contents

Karmic Theory in Jaina Philosophy – Concept of Soul Substance in Indian Philosophies – Evolution of the Living Being in Jaina – Philosophy and Science – Vow of Voluntary Death: In the Context of Victory over Afflictions and Calamity – Solution to Problems—In the Light of Acāryasī Mahāprajñā's Literature – Jaina Karmic Theory and Genetic Science – Role of Jaina Ethics in Peace and Harmony of Global Civilization – Jaina Concept of Reality with Special Reference to Western and Indian Philosophies – Comparative Study of Karma and Genes – Idealism and Realism in Western and Indian Philosophies – Promoting the Culture of Peace in the World – The Role of Jainism in Evolving Global Ethics – Outcome of Spirituality: Vasudhaiva Kutumbakam – Utility of Science of Living in Building Our Life – The Role of Yoga in Total Health – The Great and Bright Sun of Terāpantha: Acārya Bhikshu – Acārya Tulsi : An Incarnation – Highly Esteemed and Popular: Acāryasī Mahāprajñā -- Yuvācārya Mahashraman: A Grand and Impressive Personality – Samāj-Bhūsan Late Shri Jaswantmalji Sethia – The First Step to Initiation: Parmarthik Shikshan Sanstha – Formation of Sacraments in Girls: First – Priority of Modern Era – Joy-Giving Mantra: Nāmo Arhantāṅm

Enlightened Knowledge

by: Sohan Raj Tater

xxii, 247 p. ; 23 cm.

2010

978-93-80009-37-7 (HB)

INR 790.00

Knowledge is specific to human beings and self-reflection is an important step towards self realization. Such reflection or knowledge is enlightenment. Various philosophical traditions of the world have tried to understand the nature of knowledge and its power of enlightenment.

This book discusses at length the nature of knowledge and its enlightening power as explained by different schools of Indian philosophy, with special reference to the tenets and teachings of Jainism.

Prof. (Dr). Sohan Raj Tater (b.1947) is presently Pro-Vice Chancellor of Singhania University, Pachari Bari (Jhunjhunu), Rajasthan. Earlier, he served in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for 30 years, and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer. Also, he is Honorary Advisor to Jain Vishva Bharati University, Ladnun.

A well-known scholar of Jainism, Dr. Tater has to his credit a book, entitled, The Jaina Doctrine of Karma and the Science of Genetics, besides a good number of research papers published in national and international journals of repute. Also, he has participated in various seminars and conferences in India and abroad.

Readworthy Publications (P) Ltd.

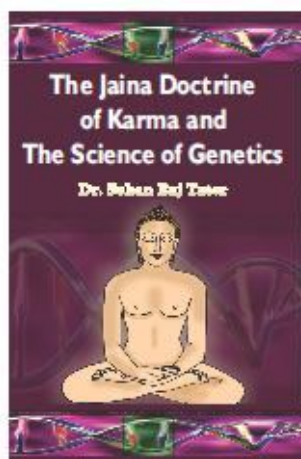
City Off.: 4735/22, Prakash Deep Building, Ground Floor, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110 002-02

Phone: 011-4354 9197 Fax: +91-11-2324 3060

Regd. Off.: A-18, Mohan Garden, Near Nawada Metro Station, New Delhi - 110 059-06

Phone: 011-2537 1324 Fax: +91-11-2537 1323

Email: info@readworthypub.com Web: www.readworthypub.com



Contents

The Science of *Karma* | What is *karma*? | Theory of *karma* in Indian philosophies | Metaphysical base of theory of *karma* -- Life in the Science of *Karma* | Characteristic of living substance | Birth of life in Jainism | Jaina view of *pariyāpti* and *prāṇa* -- Classification of *Karma* | Main Types (*mtā prakṛtī*) of *karma* in Jainism | Auspicious and Inauspicious *Karma* | Darvya and BhāVā *Karma* | Sub Groups (*Uttaraprakṛtī*) of eight main *karmas*— Bondage of *Karma* | Causes of Bondage | Components of bondage process | Punya and pāpa | Relation with bondage and *keśya* -- Fruition of *Karma* | Process of energy during rise of *karma* | *Punya and pāpa* | 42 Types fruits of auspicious *karma* 80 Types fruits of inauspicious *karma* -- Eradication of *Karma* | *Santara* | *Nirjarā* | *Caritā* | *Mahāvratas* | *Anuvratas* | Triple Jewels—the pathway to emancipation -- Science of Genetics | An introduction to the science of Genetics | Characteristics of genes | Characteristic of Genome -- Life in the Science of Genetics | Characteristics of living being | Organization of the cell | Characteristics of chromosomes - - Genetic Codes in DNA and RNA | DNA | RNA | RNA—The Process of Transcription | Genetic Codes | Classification of Genes -- *Gene Mutation* | Factors causing mutations | *Genes* and diseases | Role of faulty genes in chromosomes -- Genetic Engineering | Genetic Engineering and its application | Impact of Genetic Engineering | Preventive and social measures -- Comparative Study of *Karma* and the Science of the Genetics | Correlation between *karma* and *genes* | Effect of *karma* over *genes* | Spirituality (combination of spirit and *karma śāstra*) and *genes* | Life and *genes* | Classification of *karma* and *genes* | Function of *genes* on all 24 chromosomes | Role of *genes* in behavioural responses/personality | *Karma* and *Genes* | *karma* and genetic engineering

The Jaina Doctrine of Karma and The Science of Genetics

by: Dr. Sohan Raj Tater

xxxv, 384 p. ; 23 cm. (Hb)

2009

ISBN-13: 978-93-80009-02-5

ISBN-10: 93-80009-02-X

INR 1195.00

We have two kinds of determinants of body processes and behaviour of organisms—the *Karma* and the genes—the two seemingly diverse systems performing similar functions. This book makes a comparative study of the doctrine of *Karma* and the science of genetics.

Explaining the concept of *Karma* as known to various Indian philosophies, including Jainism, it deals with the concept of life in Jaina philosophy, and goes on to describe the classification, bondage, fruition and annihilation of *Karma*. Further discussing the developments in genetic science, along with its important aspects, it presents a comparative study of *Karma* and genes and brings out the fact that *Karmas* are the cause and genes are their effects.

Dr. Sohan Raj Tater (b.1947) is presently Pro Vice Chancellor of Singhania University, Pachari Bari (Jhunjhunu), Rajasthan. Earlier, he served in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for 30 years, and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer. Also, he is Honourary Advisor to Jain Vishva Bharati University, Ladnun.

A well-known scholar of Jainism, Dr. Tater has to his credit a good number of research papers published in national and international journals of repute. Also, he has participated in various seminars and conferences in India and abroad.

Readworthy Publications (P) Ltd.

City Off.: 4735/22, Prakash Deep Building, Ground Floor, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110 002

Phone: 011-4354 9197 Fax: +91-11-2324 3060

Regd. Off.: A-18, Mohan Garden, Near Nawada Metro Station, New Delhi - 110 059-06

Phone: 011-2537 1324 Fax: +91-11-2537 1323

Email: info@readworthypub.com Web: www.readworthypub.com

